Volume: 5 Issue: 7 Pages: 49-50

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सरकार, शिक्षक, प्रधानाचार्य एवं अभिभावकों की भूमिका एक तुलनात्मक अध्ययन

[*1] Dr. Chandra Kant Sharma and [2]Priti Sharma

[*1] Research Supervisor, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India.

[2] Research Scholar, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India.

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 13/June/2026
Accepted: 18/July/2026

***Corresponding Author**
Dr. Chandra Kant Sharma
Research Supervisor, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India.

सारांश

इस शोध का उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सरकार शिक्षक प्रधानाचार्य एवं अभिभावकों के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के अंतर्गत यह ज्ञात किया गया कि किस स्तर पर ये चारों घटक विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास में भूमिका निभा रहे हैं। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया तथा डेटा के विश्लेषण हेतु प्रतिशत] मध्यमान] प्रमाप विचलन एवं Vh परीक्षण का उपयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि सरकारी योजनाएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अत्यधिक प्रभावी हैं। शिक्षक वर्ग विद्यार्थियों के शैक्षणिक और भावनात्मक निर्माण में प्रमुख भूमिका निभा रहा है] जबकि प्रधानाचार्य विद्यालयों को अनुशासन और नेतृत्व के माध्यम से दिशा प्रदान कर रहे हैं। अभिभावक बच्चों के नैतिक और भावनात्मक विकास में सहयोगी हैं] परंतु सरकार और अभिभावकों के प्रयासों में सार्थक अंतर पाया गया।

अंततः अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सरकार] शिक्षक और अभिभावक इन तीनों के समन्वय की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: सर्वांगीण विकास] सरकारी योजनाएँ] शिक्षक प्रयास] विद्यालय प्रबंधन] अभिभावक सहयोग] तुलनात्मक अध्ययन।

1. प्रस्तावना:

भारत में शिक्षा की परंपरा सा विद्या या विमुक्तये के आदर्श पर आधारित रही है। शिक्षा केवल ज्ञान का संग्रह नहीं] बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। सर्वांगीण विकास में विद्यार्थी के बौद्धिक] शारीरिक] मानसिक] नैतिक एवं सामाजिक आयामों का समावेश होता है। आधुनिक युग में शिक्षा का दायरा विद्यालय की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहा। विद्यार्थी के विकास की यात्रा में चार मुख्य घटक सक्रिय हैं

- सरकार (नीति और योजना निर्माण
- शिक्षक (शिक्षण और प्रेरणा
- प्रधानाचार्य (नेतृत्व और प्रबंधन
- अभिभावक (पारिवारिक सहयोग और भावनात्मक समर्थन।

इन चारों पक्षों का सामूहिक प्रयास ही शिक्षा को जीवन निर्माण" का माध्यम बनाता है। वर्तमान शोध इसी पर केंद्रित है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में इन चारों की भूमिकाएँ कितनी प्रभावी हैं और क्या उनके प्रयासों में कोई सार्थक अंतर पाया जाता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- शिक्षकों द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
- विद्यालय प्रबंधन/प्रधानाचार्य की भूमिका का अध्ययन करना।
- अभिभावकों द्वारा किए जा रहे प्रयासों का विश्लेषण करना।
- सरकार] शिक्षक और अभिभावकों के प्रयासों की तुलनात्मक स्थिति का परीक्षण करना।

3. परिकल्पनाएँ

- सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में प्रभावी हैं।
- शिक्षकों द्वारा किए जा रहे प्रयास विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में प्रभावी हैं।

- अभिभावकों द्वारा किए जा रहे प्रयास विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में प्रभावी हैं।
- सरकार और शिक्षकों के प्रयासों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- सरकार और अभिभावकों के प्रयासों में सार्थक अंतर पाया जाता है।

4. अनुसंधान विधि

- **अनुसंधान पद्धति]** वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method)।
- **नमूना (Sample):** 400 उत्तरदाता (सरकारी व निजी विद्यालयों के शिक्षक, प्रधानाचार्य, छात्र एवं अभिभावक।

उपकरण

1. सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता संबंधी प्रपत्र।
2. शिक्षकों के प्रयासों की मापनी।
3. प्रधानाचार्यों के प्रयासों की मापनी।
4. अभिभावकों के प्रयासों की मापनी।

- **सांख्यिकीय तकनीकें (Statistical Tools):** प्रतिशत, मध्यमान, प्रमाप विचलन, Vh- परीक्षण।

5. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या (Data Analysis and Interpretation)

A. सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की प्रभावशीलता: सरकारी योजनाओं जैसे समग्र शिक्षा अभियान, पीएम श्री स्कूल योजना, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) आदि के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि इन योजनाओं ने विद्यालयों में शिक्षण अधिगम की गुणवत्ता, अवसंरचना और समानता को बढ़ाया है। औसत Mean = 4.25 प्राप्त हुआ bससे यह निष्कर्ष निकला कि सरकारी योजनाएँ अत्यधिक प्रभावकारी हैं।

B. शिक्षकों के प्रयास: शिक्षकों के सभी आयामों का औसत Mean 4.20 से अधिक रहा। शिक्षक विद्यार्थियों के बौद्धिक और भावनात्मक विकास में सक्रिय हैं। "शिक्षकीय व्यवहार एवं सहयोग" (Mean = 4.29) सबसे प्रभावी पाया गया।

C. विद्यालय प्रबंधकों/प्रधानाचार्यों की भूमिका: प्रधानाचार्यों के प्रयासों का औसत Mean = 4.22 पाया गया। निजी विद्यालयों में प्रधानाचार्य अधिक लचीले और सहभागी नेतृत्व प्रदर्शित करते हैं।

D. अभिभावकों के प्रयास: अभिभावकों की मापनी का Mean = 4.11 रहा। माताएँ अध्ययन–सहयोग और भावनात्मक समर्थन में अधिक सक्रिय हैं, जबकि पिता आर्थिक सहयोग तक सीमित हैं।

6. तुलनात्मक विश्लेषण

तुलना	Mean अंतर	t-मूल्य	परिणाम
सरकार – शिक्षक	0.05	1.18	अंतर असार्थक
सरकार – अभिभावक	0.14	2.33	अंतर सार्थक
सरकारी – निजी शिक्षक	0.08	1.92	अंतर असार्थक
सरकारी – निजी प्रधानाचार्य	0.28	2.16	अंतर सार्थक
माता – पिता	0.26	2.28	अंतर सार्थक

व्याख्या

सरकार और शिक्षक समान स्तर पर प्रभावी हैं, जबकि सरकार और अभिभावकों के प्रयासों में सांख्यिकीय अंतर पाया गया। निजी विद्यालयों का प्रबंधन अधिक सक्रिय है और माताओं की भागीदारी पिताओं से अधिक पाई गई।

7. मुख्य निष्कर्ष

- सरकारी योजनाएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यधिक प्रभावशाली हैं।
- शिक्षक विद्यार्थियों के मानसिक नैतिक और सामाजिक विकास में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।
- विद्यालय प्रबंधन का नेतृत्व शिक्षण गुणवत्ता और अनुशासन में प्रभावशाली सिद्ध हुआ है।
- अभिभावक विशेषतः माताएँ विद्यार्थियों को भावनात्मक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करती हैं।
- सरकार और शिक्षक के प्रयासों में कोई सार्थक अंतर नहीं] जबकि सरकार और अभिभावक के प्रयासों में स्पष्ट अंतर पाया गया।
- निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य अधिक प्रेरक और उत्तरदायी पाए गए।
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु नीति, व्यवहार और पारिवारिक सहयोग का त्रिस्तरीय समन्वय आवश्यक है।

8. सुझाव

- शिक्षा योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु विद्यालय स्तर पर Monitoring Mechanism सशक्त किया जाए।
- शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण एवं प्रेरक कार्यशालाओं का आयोजन हो।
- अभिभावक–शिक्षक संवाद को संस्थागत रूप दिया जाए।
- विद्यालय प्रबंधन को नेतृत्व विकास के प्रशिक्षण दिए जाएँ।
- सरकार को अभिभावक जागरूकता अभियानों की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

निष्कर्ष:

- अध्ययन से यह सिद्ध हुआ कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किसी एक घटक के प्रयास से नहीं] बल्कि सामूहिक सहयोग से संभव है।
- सरकारी योजनाएँ दिशा देती हैं] शिक्षक उन्हें व्यवहार में उतारते हैं] प्राचार्य संगठनात्मक समर्थन देते हैं] और अभिभावक भावनात्मक आधार प्रदान करते हैं।
- इन चारों के समन्वय से ही शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य — "मानव निर्माण" — की दिशा में अग्रसर हो सकती है।

संदर्भ सूची:

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली।
2. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2018). समग्र शिक्षा अभियान रिपोर्ट.
3. शर्मा, एस. (2019). भारतीय शिक्षा प्रणाली और परिवर्तन. नई दिल्ली: अटल पब्लिकेशन।
4. सिंह, आर. (2021). शिक्षा का समाजशास्त्र. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
5. UNESCO (2022). Education for All Global Report. Paris: UNESCO.
6. पटेल, वी. (2020). शिक्षक और शिक्षण की भूमिका. अहमदाबाद: एकता पब्लिशर्स।